Emerging Trends in Education [Vol. V - No. 1 - No. 1 . pp 44-54]

नारी उत्थान में समाचार पत्रों की भूमिका

धीरेन्द्र पाठक*

वैदिक काल में नारी का पूज्यनीय स्थान था। डॉ. मंगल देव शास्त्री ने लिखा है कि "वैदिक काल में तथा उसके अनन्तर भी समाज में स्त्री का कितना ऊँचा स्थान था, यह इससे स्पष्ट है कि वैदिक ऋषियों में घोषा, विश्ववारा, लोपामुद्रा जैसी ऋषिकाओं के नाम आते हैं। उपनिषदों में गार्गी जैसी ब्रह्मवादिनियों का उल्लेख मिलता है। महाभाष्य (समय लगभग ई.पू. 150) में मीमांसा जैसे विषयों को पढ़ने वाली स्त्रियों का तथा पठन–पाठन में आचार्या तथा 'उपाध्याया' स्त्रियों का उल्लेख आया है।

मध्यकालीन भारत में मीरा ने सामंती समाज – पितृसत्तात्मक समाज के विरोध में झंडा बुलंद किया और तत्कालीन समाज में स्थापित मूल्य मान्यताओं को ललकारा और अनोखी पहचान बनायी। औरंगजेब की पुत्री शाहजादी 'जैबुन्निसा बेगम' भी हिन्दी की कवयित्री थी। उनके काव्य संग्रह का नाम "नैन विलास" है जिनमें से यह दोहा पं. अम्बिका प्रसाद बाजपेयी ने उद्धृत किया है –

"जैबुन्निसा जहान में, दुख्तर आलमगीर।
नैन–विलास विलास में खास करी तहरीर।"

सामान्यत तत्कालीन भारतीय समाज में नारी की स्थिति काफी दयनीय थी। इसका मूल कारण अशिक्षा, असुरक्षा, बाल विवाह और अन्य कुरीतियाँ थीं, इसके कारण सती की घटनाएं होती थीं। अकबर एवं औरगंजेब ने सती प्रथा को रोकने के लिए कानून भी बनाये। उन्नीसवीं सदी के आरंभ में भारत में सामाजिक सुधार के रूप में एक नये आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। अरूधंती मुखोपाध्याय के अनुसार "तत्कालीन पुनरूत्थानवादियों और राष्ट्रवादियों ने उपनिवेशवाद विरोधी जाति आधारित एक ऐसी महिमा मंडित "परम्परा" की खोज शुरू करने की ऐसी योजना बनाई जिसमें समाज सुधारक स्वयं भी शामिल हो जाए। इससे थोड़ा आगे बढ़ाते हुए पुनरूत्थानवादियों ने इस्लाम को राक्षसी प्रवृत्तिवाला एवं मुसलमानों को आक्रांता के रूप में परिभाषित किया जिससे सुधारक भी सहमत थे और उन्होंने मुगलशासन को एक ऐसा दौर बताया जिसमें हिन्दुत्व का पतन हुआ तथा हिन्दु स्त्रियों के बारे में कहा गया कि मुगलों ने उन्हें भ्रष्ट कर सामाजिक तौर पर निकृष्ट बना दिया।"

भारत में नारी समाज सुधार एकरूपी नहीं था, बहुरूपी था। समाज सुधार का मुख्य केन्द्र बंगाल था और मुख्य बिन्दु नारी शिक्षा थी। इस सुधार के मुख्य प्रेरक एक एंग्लोइण्डियन एच. डेरीजियों थे, जो फ्रांसिसी क्रांति की स्वाधीनता एवं समानता की अवधारणा से प्रभावित थे।

* एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, रानी दुर्गा विश्वविद्यालय, जबलपुर (मध्यप्रदेश)

डेरीजियों के युवा बंगाली आन्दोलन, जिसमें युवा काफी संख्या में थे ने नारी की सामाजिक स्थिति के सुधार के लिए आन्दोलन किया। नारियों को शिक्षित करने के लिए पहली सार्वजनिक बहस राजाराम मोहन राय द्वारा 1815 में स्थापित आत्मीय सभा ने बंगाल में छेड़ी। राजा साहब ने सती उन्मूलन के साथ नारी की दशा सुधारने के लिए उन्हें शिक्षित किये जाने पर जोर दिया। ब्रिटिश सरकार एवं ईसाई मिशनरियों ने 1810 में लड़कियों के लिए सबसे पहले स्कूल शुरू किया। विलियम एडम ने 1800 के आसपास भारत के शिक्षा की तत्कालीन स्थिति का पूर्ण अध्ययन कर "आन वर्नाक्युलर एजुकेशन" पर तीन रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसमें उल्लेख है कि "भारत में स्त्री शिक्षा पूरी तरह अज्ञात थी और इस उद्देश्य के लिए कोई भी सार्वजनिक संस्थान नहीं था। यह अन्धविश्वास था कि जो लड़की लिखेगी या पढ़ेगी वह विवाह के बाद जल्द ही विधवा हो जाएगी। पूरे मुर्शिदाबाद जिले में एडम को केवल नौ स्त्रियाँ ऐसी मिलीं जो कुछ लिख या पढ़ सकती थीं। अन्य क्षेत्रों में जहाँ गणना की गयी, एक भी वयस्क स्त्री ऐसी नहीं थी जो शिक्षा का न्यूनतम स्तर भी जानती हो। कुछ अपवाद जमीदारों की लड़कियाँ व धार्मिक वर्ग से जुड़ी स्त्रियों के रूप में थे।"

स्त्रियों की शिक्षा संबंधित पहली पुस्तक किसी भारतीय भाषा में (बंगाली) में सन् 1819 में एक भारतीय गुरूमोहन विद्यालंकार द्वारा लिखी गयी जिसे कलकत्ता की कन्या बाल समिति ने सन् 1820 में प्रकाशित किया। सन् 1827 तक मिशनरियों द्वारा हुगली जिले में 12 कन्या पाठशालाएँ चलाई जाने लगी, एक वर्ष बाद "लेडीज सोसायटी फार नेटिव फीमेल एजुकेशन इन कैलकटा एण्ड इट्स विसिनिटी" ने स्कूल खोले जो मिस कुक द्वारा चलाए गए। उन्नीसवीं सदी के मध्य तक बंगाल खासतौर से कलकत्ता में स्त्रियों की शिक्षा का मुद्दा उदार हिन्दुओं, ब्राह्मणों और प्रगतिशील छात्रों के लिए आन्दोलन का विषय बन गया। मिशनरी स्कूलों द्वारा ईसाइयत फैलाने के खतरे से डरकर बंगाल में हिन्दू एवं ब्राह्मण कन्या पाठशालाएँ खोली गयीं। उन्नीसवीं सदीं की शुरूआत में जहाँ मिशनरी स्कूलों में अधिकांश लड़कियां गरीब परिवारों की थीं, वहीं इन नए खुले विद्यालयों में ऊँची जातियों की लड़कियॉ पढ़ने गईं। ईसाई धर्म के प्रचारक सीरामपुर के मिशनरियों ने शिक्षा प्रचार के लिए काफी कार्य किया। सीरामपुर से प्रकाशित बंगला साप्ताहिक 'समाचार दर्पण' 06 और 13 अप्रैल 1022 के अंक में छापता है कि "याज्ञवल्क्य पत्नी मैत्रेयी, अनसूया, द्रौपदी, रूक्मिणी, चित्रलेखा, लीलावती, कर्णाटक की महारानी, राजा लक्ष्मण सेन की रानी आदि स्त्रियॉ अपनी विद्वता के कारण प्रसिद्ध थीं।" राजा राममोहन राय की संवाद कौमुदी और साप्ताहिक रिफार्मर (1831) ने "स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए स्त्री शिक्षा की वकालत की और हिन्दू विधवा विवाह का समर्थन किया, जिससे नारियों के प्रति समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर किया जा सके।"

उन्नीसवीं सदी के मध्य में बंबई प्रेसीडेंसी में सुधार आन्दोलन उभरे, जिसकी शुरूआत दकियानूसी पुजारियों और जातिवादी संस्थानों पर हमलों से हुई। बंगाल में शुरूआती हमले रूढ़िवादी हिन्दू रीति–रिवाजों पर शास्त्रार्थ के रूप में हुए तथा इसके पश्चात् सुधार आधारित

संगठनों तथा विद्यालयों एवं गृहों जैसे संस्थानों की स्थापना हुई। सन् 1839 में श्री नाथ राय द्वारा प्रकाशित पत्र साप्ताहिक 'संवाद भास्कर' का दृष्टिकोण प्रगतिशील था। उसने महिला शिक्षा का जोरदार पक्ष लिया। सन् 1849 में कोलकत्ता में हिन्दू बालिका विद्यालय की स्थापना हुई तब उसका स्वागत करते हुए इसे स्त्रियों की मुक्ति का कदम निरूपित किया गया। दलितों की अस्मिता एवं स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत ज्योतिराव फुले (ज्योतिबा) ने सन् 1848 में पूना में दलित कन्याओं को शिक्षित करने के लिए लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला। इसी वर्ष एल्फिन्सटन कॉलेज बम्बई के छात्रों ने कन्या पाठशाला शुरू की तथा स्त्रियों के लिए मासिक पत्रिका निकाली। सन् 1852 तक ज्योतिबा ने तीन कन्या पाठशालाएँ तथा अछूतों के लिए एक स्कूल खोला।

हिन्दी पत्रकारिता और हिन्दी साहित्य को संस्कारित करने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 15 अगस्त 1867 को काशी से 'कविवचनसुधा' निकाला। नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करते हुए कविवचनसुधा लिखता है कि "यह बात सिद्ध है कि पश्चिमोत्तर देश की कदापि उन्नति नहीं होगी, जब तक यहाँ की स्त्रियों की भी शिक्षा न होगी क्योंकि यदि पुरूष विद्वान होंगे और उनकी स्त्रियाँ मुर्खा तो उनमें आपस में कभी भी स्नेह न होगा और नित्यकलह होगी।" बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने कलकता से सन् 1873 में 'बंगदर्शन' का प्रकाशन किया। सामाजिक सुधार, शिक्षा, नारी उत्थान के लिए प्रकाशित पत्र ने अंग्रेजी भाषा पर प्रहार किया और बंगाली भाषा की उन्नति के लिए प्रयासरत रहा। 'बंगदर्शन' स्त्री शिक्षा पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि "इस समय सब लोग स्वीकार करते हैं कि लड़कियों को कुछ लिखना–पढ़ना अच्छा है किन्तु इस समय भी प्रायः अपने मन में यह कोई नहीं सोचता कि मर्दों की तरह औरतें भी अनेक प्रकार के साहित्य, गणित, विज्ञान, दर्शन आदि की शिक्षा क्यों न प्राप्त करें। जो लोग पुत्र को एम.ए. पास न होने पर विषपान करने की इच्छा करते है वे ही कन्या के कथा–माला (छोटी कक्षा की पुस्तक) समाप्त कर लेने से कृतार्थ हो जाते हैं। कन्या भी पुत्र की तरह एम.ए. क्यों नहीं पास करेगी, इस प्रश्न को वे एक बार भी अपने मन में स्थान नहीं देते।"

'बंगदर्शन' आगे लिखता है "वास्तव में बंगदेश में, भारत वर्ष भर में भी कह सकते हैं। स्त्रियों को पुरूषों की तरह लिखना–पढना सिखाने का उपाय नहीं है। बंगवासी लोग अगर सचमुच स्त्री–शिक्षा की अभिलाषा रखते, तो उसका उपाय भी होता। वह उपाय दो प्रकार का है। एक तो यह कि स्त्रियों के लिए अलग स्कूल खोलना। दूसरा है पुरूषों के स्कूल में स्त्रियों को शिक्षा दिलाना। दूसरे उपाय का नाम सुनते ही बंगाली लोग जल उठेंगे। वे निःसन्देह अपने मन में सोचेंगे कि मर्दों के स्कूल में स्त्रियाँ पढ़ने लगेंगी तो लड़कियों का अधःपात तो होगा ही, अधिक यह होगा कि लड़के भी मनमाना आचरण करने लगेंगे। स्त्री शिक्षा उचित है या नहीं। शायद सभी उसको उचित कहेंगे। इसके बाद प्रश्न होता है किसलिए उचित है ? इसके उत्तर में यह कोई नहीं कहेगा कि नौकरी के लिए। जान पड़ता है इस देश के सभी सुशिक्षित लोग उत्तर देंगे कि स्त्रियों को नीति सिखाने के लिए, उनका ज्ञान बढ़ाने के लिए, उनकी बुद्धि परिमार्जित

करने के लिए उन्हें लिखना–पढ़ना सिखना उचित है।"

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्त्री शिक्षापयोगी मासिक पत्रिका 'बालाबोधिनी' सन् 1874 में प्रकाशित किया। 'बालाबोधिनी' हिन्दी भाषा में स्त्रियों पर केन्द्रित पहली पत्रिका थी। 'बालाबोधिनी' में स्त्रियों की नैतिक शिक्षा के ज्ञान के साथ ही उपयोगी रचनाएँ प्रकाशित होती थी। पत्र लिखता है "हे सुमति, जब बालक तुम्हारा भँली प्रकार बातचीत करने लगे तो उसको वर्णमाला याद कराती रहो फिर उन्हीं को पट्टी पे लिख के अभ्यास कराओ और रातों को गिनती और सुन्दर–सुन्दर श्लोक और छोटे स्त्रोत याद कराओ। इस व्यौहार में कई एक बातें सुन्दर प्राप्त होंगी। प्रथम तो बालक को खेल ही खेल में अक्षर ज्ञान हो जावेगा दूसरे उसका काल भी व्यर्थ नहीं जायेगा फिर इस अवसर का पढ़ा–लिखा विशेष करके याद रहता है।

बंगला मासिक 'भारती' द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर ने सन् 1877 में प्रकाशित किया। पत्र के सम्पादक रविन्द्रनाथ टैगोर थे। सामाजिक उत्थान एवं नारी उद्धार के लिए समर्पित इस पत्र की सम्पादन सहयोगी के रूप में श्रीमती सुवर्ण कुमारी देवी ने अपने दायित्व का निर्वहन किया। 'जयाजी प्रताप' में सन् 1915 भारती के सम्बन्ध में जानकारी लिखता है–"श्रीमती सुवर्ण कुमारी देवी सहयोगी 'भारती' सम्पादन कार्य से पृथक हो गई है। पत्र इस समय 39 वर्ष का है।" श्रीमती सुवर्ण कुमारी देवी 'फिर सम्पादिका' शीर्षक से माधुरी (1924) ने लिखा कि "श्रीमती सुवर्ण कुमारी देवी बंगाल के सुप्रसिद्ध टैगोर परिवार की कन्या और सुशिक्षिता है। आप पहले सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका भारती (बंगला) का सम्पादन बड़ी योग्यता के साथ करती थी, अब फिर आपने उसके सम्पादन का कार्य अपने हाथ में ले लिया है।"

दयानंद सरस्वती ने सन् 1877 में लाहौर में 'आर्य समाज' की स्थापना किया। दयानंद सरस्वती ने अपनी पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में कहा है कि "वैदिक भारत में शिक्षित स्त्री एवं पुरूष एक समान है। सरस्वती जी ने स्त्रियों की शिक्षा पर जोर देते हुए अपना मत दिया किया कि नारी शिक्षित होकर पत्नी और माँ के रूप में अपने कर्तव्यों का सम्यक निर्वहन कर सकेगी उन्होंने कहा कि माँ के रूप में स्त्री की भूमिका शिशु जन्म तथा उसके पश्चात बच्चों के रहन–सहन सम्बन्धी मानदंड स्थापित करने के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है।" सन् 1880 के मध्य से आर्य समाज स्त्री शिक्षा आन्दोलन में सक्रिय हुआ। सन् 1890 में जालंधर के आर्य समाज ने कन्या पाठशाला खोली तथा एक वर्ष के भीतर ही समाज ने पाठशाला में अविवाहित कन्याओं की भाँति ही विधवाओं को भी प्रवेश देने का निर्णय किया गया और एक वर्ष बाद उच्च शिक्षा के लिए कन्या महाविद्यालय खोलने की घोषणा की गयी। कन्या महाविद्यालय के खुलने से पूर्व स्त्रियों की उच्च शिक्षा के विषय पर आर्यसमाजी विभाजित हो गए। यद्यपि कन्या महाविद्यालय खुला परन्तु उसका पाठ्यक्रम कन्या पाठयशाला के पाठ्यक्रम का विस्तारित रूप ही नजर आया। दोनों ही पाठ्यक्रम ब्राह्मण स्कूलों में प्रचलित पाठ्यक्रम के समान ही थे। प्राथमिक साक्षरता के साथ–साथ अंकगणित तथा कुछ काव्य, आर्य समाजी धार्मिक साहित्य, सिलाई, कढ़ाई, पाकशास्त्र तथा सफाई, कला तथा संगीत के विषय पढ़ाए जाते थे।

ब्रिटिश सरकार ने नारियों को शिक्षित करने के दृष्टिकोण से 1849 में विथमून स्कूल स्थापित किया जो सन् 1879 में कालेज बन गया और भारत का पहला महिला कालेज बनने का गौरव प्राप्त किया। सन् 1883 में चन्द्रमुखी वसु और कादम्बिनी गांगुली ब्रिटिश साम्राज्य और भारत के स्नातक की डिग्री प्राप्त करने वाली पहली महिलायें बनी और इन दोनों ने सन् 1886 में पश्चिम दवाओं में प्रशिक्षण भी प्राप्त किया।

मध्यप्रांत के रतलाम से राष्ट्र की पहली महिला सम्पादक–प्रकाशक हेमन्त कुमारी देवी ने सन् 1888 में मासिक पत्रिका 'सुगृहिणी' निकाला। नारी शिक्षा, नारी धर्म, उन्नत नारी जीवन, सती गंगा एवं आदर्श माला विषयक से विभूषित पत्रिका में स्त्री उपयोगी समाचार प्रकाशित होते थे। पाठक के अभाव में महज तीन वर्ष तक जीवित इस पत्र में खबर प्रकाशित हुआ कि "बम्बई के भले मानस ने विज्ञापन दिया है कि जो हिन्दू स्त्री एल.एम.एस. की परीक्षा पास करके उसके बाद डाक्टरी का काम करेगी उसे वे 15 रू. मासिक वृति देंगे।" स्त्री शिक्षा पर केन्द्रित एक अन्य खबर प्रकाशित हुआ "भाऊ नगर के राजा साहब ने स्त्री शिक्षा के प्रति अपने गाढ़े अनुराग का दृष्टान्त दिखाया है। एक पत्र लेखक ने लिखा है कि एक बालिका विद्यालय में वहाँ की राजकुमारी भी पढ़ती है। पुरस्कार दान के समय राजकुमारी ने अपना शिल्प कार्य भी दिखाया था जो कि बहुत उत्तम था इसलिए उन्हें भी एक पुरस्कार मिला है।"

बिहार टाइम्स/बिहारी (1894) को पटना से महेश नारायण के सम्पादन एवं सच्चिदानंद सिन्हा के प्रेरणा से प्रकाशित हुआ। "बिहार बिहारी के लिए" ध्येय वाक्य से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा का साप्ताहिक जो बाद में दैनिक हो गया, का हिन्दी संस्करण 'हिन्दी बिहारी' (1915) में निकाला पत्र ने 14 फरवरी 1915 के सम्पादकीय में "युवावस्था पर हिन्दू कन्या का विवाह" में नारी शिक्षा पर जोर दिया और बाल विवाह का विरोध किया। पत्र ने लिखा कि "पाठकों को मालूम होगा कि बढ़े लाट साहब के कौंसिल में एक लिपि उपस्थित की गई है जिसका आशय यह है कि हिन्दुओं में कन्याओं का विवाह युवावस्था प्राप्त होने पर हुआ करें। इस लिपि के सम्बन्ध में हिन्दू समाज में एक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ है एक दल कहता है कि कन्याओं का अधिक उमर में विवाह करना धर्म के विरूद्ध है। दूसरा दल कहता है कि वर्तमान समय में इसकी आवश्यकता है। शास्त्र और समय दोनों ही बातों को देखना चाहिए। .... जब हमारी कन्याएँ शिक्षिता होंगी और सुख–दुःख को समझने लगेंगी तब वे स्वयं बाल विवाह के विरूद्ध खड़ी हो जाएगीं। क्या हम लोग बाल विवाह को जारी रखने के लिए अपनी बालिकाओं को शिक्षिता न बनाये, क्या हम लोग शास्त्र के पुराने नियम के लिए अपनी हिन्दू जाति के नाश के कारण बनें। यदि यही श्रेय है तो हम लोग जरूर इस लिपि के विरूद्ध आन्दोलन करेंगे।" मुम्बई से मई सन् 1895 में मराठी भाषा का मासिक मनोरंजन ने महाराष्ट्र स्त्रियों पर लेख निकाले और स्त्री शिक्षा का प्रचार किया। उर्दू में महिला पत्रिका का शुभारंभ मौलवी सईद अहमद ने तहजीब–ए–निस्बां सन् 1898 में निकाला। महिलाओं एवं गृहस्थी के उपयोग में आने सामग्री पत्र प्रकाशित किए जाते थे।

महिलाओं के लिए ज्ञानवर्धक, उपयोगी रचनाओं से पूर्ण प्रयाग से जून सन् 1909 में हिन्दी मासिक 'स्त्री दर्पण' रामेश्वरी नेहरू के सम्पादन में निकला। इसी वर्ष 'स्त्री धर्म' शिक्षका यशोदी देवी के सम्पादन में प्रयाग से निकला। स्त्री शिक्षा, गृहस्थी धर्म, स्वास्थ्य, समाज सुधार, राजनीति पर केन्द्रित हिन्दी मासिक 'गृहलक्ष्मी' गोपाला देवी के सम्पादन में काशी से निकला। इस दौर में राष्ट्रवादी विचारों के प्रचार–प्रसार में स्त्रियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कई क्रांतिकारी लेखिकाएं थी। बंगाल में नागेन्द्र कला, मनकुमारी बासु, कुमदिनी राय स्त्रियों की नैतिकता एवं शिक्षा पर नाटक, कहानियाँ, कविताएं लिखी। महाराष्ट्र में रमाबाई, काशीबाई कानितकर, मैरी मोरे, रूक्मिणी बाई अपने लेखन के जरिए जानी जाने लगी। रमाबाई ने बालिकाओं की शिक्षा के लिए शारदा सदन खोला। इण्डियन लेडीज मैगजीन की सम्पादक कमला सत्यावंदन एक उपन्यासकार थीं। रूप कुमारी नेहरू ने लड़कियों पर आधारित पत्रिका 'कुमारी दर्पण' निकाला। सरला देवी, कुमुदिनी मित्रा तथा मैडम कामा ने क्रान्ति से सम्बन्धित प्रेरक पत्रकारिता पर ध्यान केन्द्रित किया। यशोदा देवी के सम्पादन में प्रयाग से सन् 1913 में मासिक पत्रिका 'कन्या सर्वस्व' निकला। शिक्षा उपदेश एवं मनोंरजन से परिपूर्ण बालिकाओं की पत्रिका 'कन्या मनोरंजन' ओंकार नाथ बाजपेई ने निकाला। इसी वर्ष मेरठ से महिला उपयोगी पत्रिका 'भारत महिला' निकली।

मजदूरों, स्त्रियों का प्रबल समर्थक मराठी दैनिक 'सन्देश' सन् 1915 में निकला। बार–बार विपत्तियों का सामना करते हुए सन्देश ने आजादी की अलख जगायी। संदेश की नीति का खुलासा करते हुए पत्र के वरिष्ठ रिपोर्टर कोल्हटकर ने लिखा था। "संदेश मजदूरों का पत्र है यह अस्पृश्यों का कैवारी है, यह धार्मिक स्वतंत्रता का अभिमानी है, स्त्री शिक्षा का प्रबल समर्थक है। हमारी भगनियों को संदेश इतना प्रिय है कि संदेश देखते ही उन्हें अपने मैके से कोई आया, ऐसा लगता है। संदेश की यही नीति आगे होगी। "सन् 1918 में 'आर्य महिला' पत्रिका आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद की ओर से सुन्दरी देवी के सम्पादन में निकला। इस पत्र में 'अपनी बात' शीर्षक से सम्पादकीय लिखी जाती थी। स्त्रियों के संर्वागीण उत्थान की पत्रिका 'चाँद' का प्रकाशन प्रयाग से रामरख सिंह सहगल ने नवम्बर 1922 में निकाला। जनवरी 1928 के अंक में सम्पादक ने पाठकों से मार्मिक अपील की "प्यारे पाठकों चाँद का प्रकाशन नवम्बर 1922 से आरंभ हुआ था। अब तक 64 अंक प्रकाशित हो चुके है। पिछले लगभग साढ़े पाँच वर्षों से जहाँ तक मुझसे हो सका, तन–मन और धन से मैंने भारतीय समाज तथा महिला मण्डल की सेवा करने का प्रयत्न किया है। यही मेरे जीवन का ध्येय था और आज तक इतनी अधिक कठिनाईयाँ सहते हुए भी, मैंने सदा अपना कर्तव्य पालन करने का यथा शक्ति प्रयत्न किया है।"

"विशाल भारत" ने चाँद पर एक विश्लेषणात्मक समीक्षा प्रकाशित किया "स्त्रियों के लिए जिन–जिन विषयों की जानकारी भारतीय प्रबुद्ध वर्ग ने जरूरी समझा उसकी वास्तविक पूर्ति श्री रामरख सिंह सहगल के प्रकाशन चाँद से हुए हो सकी है। 'चाँद' का नववर्षांक विदुषी अंक के रूप में निकला, जिसका सम्पादन महादेवी वर्मा ने किया। 'जयाजी प्रताप' चाँद के नववर्षांक पर

लिखता है कि "सम्पादिका श्रीमती महादेवी वर्मा एम.ए., मैंनेजिंग डायरेक्टर पं. निरंजन लाल भार्गव, प्रकाशक चाँद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद वार्षिक मूल्य साढ़े छह रूपये, इस अंक का मूल्य डेढ़ रूपया पृष्ठ संख्या 160, चित्र तिंरगे 3, दुरंगे 3 और इकरंगे 35। चाँद शिक्षित और समुन्नत महिलाओं का श्रेष्ठ पत्र है। चाँद में केवल नारी आन्दोलन ही नहीं अपितु सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक सुधारों से सम्बन्ध रखने वाली भी पर्याप्त सामग्री रहती है। अतः इस उत्कृष्ठ सुधारक भी माना जाता है।"

प्रयाग महिला विद्यापीठ ने अक्टूबर सन् 1923 में 'महिला' पत्र निकाला। विदुषी की सम्पादक सुशीला देवी पत्र की सम्पादक थी। अप्रैल सन् 1924 में महिलाओं के समग्र विकास एवं महिलापयोगी सामग्री से अलंकरित पत्रिका 'मनोरमा' इलाहाबाद से निकली। आरंभ में ज्योति प्रसाद निर्मल सम्पादक थे। सन् 1952 में क्षितीन्द्र मोहन मित्र सम्पादक हो गए। सन् 2002 तक बिना किसी व्यवधान के निरन्तर प्रकाशित इस पत्रिका की सन् 1980 के दशक का "महिला विशेषांक अंक" काफी चर्चित रहा। इस अंक में राजी सेठ, मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, मन्नू भण्डारी, शिवानी, मृणाल पाण्डेय जैसी प्रतिष्ठित लेखिकाओं की कहानियाँ, आत्मकथ्य आदि प्रकाशित किए गए। इस पत्रिका में महिलाओं पर केन्द्रित स्वास्थ्य जागरूकता, घर–गृहस्थी, पाक विद्या, कढ़ाई–बुनाई, शिक्षा, सौन्दर्य आदि विषयों को प्रकाशन सामग्री के रूप में चयन किया जाता रहा है।

काशी के सरस्वती प्रेस से मार्च सन् 1930 में मुंशी प्रेमचन्द के सम्पादन में मासिक पत्रिका 'हंस' निकली। सामाजिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक उत्थान पर केन्द्रित इस पत्रिका के फरवरी सन् 1936 के "नारी जाति के अधिकार" शीर्षक सम्पादकीय में निम्नांकित पाँच महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए थे :

- एक विवाह का नियम स्त्री–पुरूष दोनों ही के लिए समान रूप से लागू हो। कोई पुरूष पत्नी के जीवन–काल में दूसरा विवाह न कर सके।
- पुरूष की सम्पत्ति पर पत्नी का पूरा अधिकार हो। वह उसे रिहन, वय जो कुछ चाहे कर सके।
- पिता की सम्पत्ति पर पुत्रों और पुत्रियों का समान अधिकार हो।
- तिलाक (तलाक) का कानून जारी किया जाए और स्त्री–पुरूष दोनों ही के समान हो।
- तिलाक के समय स्त्री–पुरूष की आधी सम्पत्ति पाये और यदि मौरूसी जायदाद हो, तो उसका एक अंश।

समाचार पत्रों की यह भूमिका ने नारी को हिन्दी वर्णमाला ज्ञान और चहर दिवारी की भीतर कैद के स्वरूप के बाहर निकाल राष्ट्रवादी चरित्र की भावना को उजागर किया और उन्हें शिक्षित कर समाज की मुख्य धारा में शामिल किया। सन् 1908 में मद्रास महिला परिषद सम्पन्न हुई जिसमें समूचे दक्षिण भारत की महिलाएं शामिल हुई। सन् 1910 में उग्रराष्ट्रवादी स्त्रियों

महिला अधिकारों के मुददे पर होने वाले आन्दोलन में सक्रिय होने लगीं। सन् 1917 में सरोजनी नायडू के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल स्त्रियों की दशा सुधारने की मांग को लेकर मांटेग्यू एवं चेम्सफोर्ड समिति से मिला। प्रतिनिधिमंडल में 14 सदस्य थीं। प्रतिनिधिमंडल ने माँग की "स्त्रियों के लिए बेहतर शैक्षणिक सुविधाएँ, उन्नत स्वास्थ्य तथा प्रसूति सेवाएँ और उनके भाइयों के समान वोट देने के अधिकार दिए जाए।" सन् 1917 में एनी वेसेण्ट, जिनराज दास, मालती पटवर्धन ने मिलकर विमेंस इण्डियन एसोसियन की स्थापना किया। सन् 1916 में पहला महिला विश्वविद्यालय एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय की स्थापना समाज सुधारक धोडों केशव कर्वे ने किया। इस विश्वविद्यालय के प्रथम वर्ष में केवल पॉच छात्राओं ने प्रवेश लिया।

सन् 1925 के अंत एवं 1926 के आंरभ में वीमेंस इंडिया एसोसिशन की संस्थापक सचिव तथा 'स्त्री धर्म' नामक पत्रिका की संपादक मार्गरेट कूजिंस ने एक पत्र लिखा जिसे अनेक महिला संगठनों सहित प्रमुख व्यक्तियों को भेजा गया। उन्होंने पत्र में सारे देश की स्त्रियों को नारी शिक्षा पर चर्चा करने की दावत दी थी, निःसंदेह ही महिलाओं के लिए अब यह आवश्यक हो गया है कि वे भारत में लड़कियों तथा लड़कों विशेष रूप से लड़कियों को वर्तमान में दी जाने वाली शिक्षा पर अपना मत स्पष्ट करें। सन् 1927 में अखिल भारतीय महिला शिक्षा सम्मेलन का आयोजन पुणे में किया गया। स्त्रियों के महान उपलब्धि पर तमिल राष्ट्रवादी कवि सुब्रम्हण्या भारती की कविता 'स्वाधीनता का नृत्य' से परिलक्षित होती है :–

नाचो! खुशियाँ मनाओ।
जो कहते थे कि स्त्रियों का पुस्तक छूना पाप है।
वे मर चुके हैं
जो मूर्ख कहते थे कि वे स्त्रियों को
घरों में कैद कर देगें
वे अब अपनी सूरत नहीं दिखा सकते
उन्होंने हमारी जगह घर में दिखाई।
जैसे हम कोई बैल हो,
जो चारा खाए, पीटा जाए और
मुँह बन्द करके काम करे।
हमने यह सब खत्म कर दिया है
नाचो–गाओ खुशी मनाओ।

नारी पर सचित्र हिन्दी मासिक 'सहेली' सन् 1930 में राजेश्वरी देवी के प्रधान सम्पादन में इलाहाबाद से निकली। महिलाओं के सर्वतोमुखी विकास पर प्रशस्त इस पत्रिका में विजय लक्ष्मी पंडित, उमा नेहरू, सरोजनी नायडू के लेख तथा महादेवी वर्मा, तोरन देवी की कविताओं से सज्जित विशेषांक चर्चित रहे। सहेली ने सन् 1933 में बाल विधवाओं की संख्या प्रकाशित कर समाज को झकझोरा। "पाँच से दस वर्ष की आयु वाली बाल विधवाएं बंगाल में 17583, बि

36275, मद्रास में 5038, उत्तरप्रदेश में 17209 और बडोदा 783 थीं।" 1938 में सीता देवी के सम्पादन में मासिक 'महिला' प्रकाशित हुआी। प्रयाग से दिसम्बर 1940 में मासिक पत्रिका 'दीदी' ठाकुर श्रीनाथ सिंह के प्रंबध सम्पादन एवं यशोवती तिवारी के सम्पादन में निकला। प्रवेशांक में ही पत्रिका के ध्येय को सम्पादक ने स्पष्ट कर दिया–"दीदी को हम वह दर्पण बनाना चाहते हैं जिसमें हमारी भारतीय बहनें अपने वास्तविक स्वरूप को ठीक–ठीक देख सकें। स्त्री जीवन का हम एक ध्येय मानते हैं राष्ट्र में प्राण फूंकना। इस ध्येय की ओर बढ़ाने में दीदी प्रत्येक स्त्री की सहायता करेगी। अगर कोई स्त्री स्वादिष्ट भोजन बनाती है, अपने परिवार को प्रेम से खिलाती है, अपने बच्चों को स्वस्थ्य, चरित्रवान और प्रसन्न रखती है, अपने पति का दुख–सुख में हाथ बढ़ाती है, अपने घर को साफ–सुथरा और प्रकाशमान रखती है, उसकी चितवन मात्र परिवार भर की उदासी हर लेती है, जरूरत पड़ने पर वह उन सब कार्यों को भी कर सकती है, जो मर्दों के कहे जाते हैं, अपने स्वास्थ्य, सौन्दर्य और यौवन की रक्षा करती है, अपने प्रेम को निष्कंलक, अपने ह्रदय को उदार और अपने मस्तक को स्वामिभान से ऊँचा रखती है तो वह आदर्श स्त्री है। उसी आदर्श के लिए निरन्तर लड़ते रहना 'दीदी' का एक मात्र ध्येय होगा।"

कवयित्री सुभ्रदा कुमारी चौहान और हरदेवी मलकानी के सम्पादन में हिन्दी मासिक 'नारी' अगस्त सन् 1947 में काशी से निकला। महिलाओं के सर्वतोमुखी विकास पर केन्द्रित इस पत्रिका की संरक्षक विजयलक्ष्मी पंडित थीं। प्रवेशांक में महिलाओं के अधिकार, राजनीति में नारी, स्त्रीधन, प्रथम महिला राजदूत पर लेख तथा हमारा घर, संगीत, पाकशास्त्र, बाल मनोरंजन आदि स्तम्भ प्रकाशित हुए। सन् 1940 के आसपास भारतीय क्षितिज पर स्वाधीनता का इन्द्रधनुष दिखाई देने लगा और नारियों का आन्दोलन पूरी तरह स्वाधीनता संग्राम में तब्दील हो गया। नारी मुक्ति के मुददे को भारत की स्वाधीनता के साथ जोड़कर देखा जाने लगा। भारत की आजादी के संघर्ष में महिलाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। भिकाजी कामा, डा. एनी बेसेण्ट, प्रतिलता वाडेकर, विजयलक्ष्मी पंडित, राजकुमारी अमृत कौर, अरूणा आसफ अली, सुचिता कृपलानी और कस्तूरबा गांधी कुछ प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों में शामिल है। मधुलक्ष्मी रेडडी, दुर्गाबाई देशमुख, कैप्टन लक्ष्मी सहगल कई महिलाओं सुभाष चन्द्र बोस की इण्डियन नेशनल आर्मी की झाँसी की रानी रेजीमेण्ट की सेना में थी। सन् 1944 में आसिमा चटर्जी ऐसी पहली भारतीय महिला थीं जिन्हें किसी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा विज्ञान में डाक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया और आजादी के बाद सरोजनी नायडू संयुक्त प्रदेशों की पहली महिला राज्यपाल बनी।

देश को आजाद हुए 67 वर्ष हो गए आजादी की दौर की मशीनरी पत्रकारिता व्यवसायवाद से बाजारवाद तक पहुँच गयी। भारत के संविधान में महिलाओं को समान अधिकार (अनुच्छेद 14), राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं करने (अनुच्छेद 15), अवसर की समानता (अनुच्छेद 16), समान कार्य के लिए समान वेतन (अनुच्छेद 39 (घ)) की गांरटी देता है। सन् 1990 के दशक में विदेशी दाता एजेंसियों से प्राप्त अनुदानों ने नई महिला उन्मुखी गैर सरकारी

संगठनों के गठन ने महिलाओं के अधिकारों के लिए प्रमुख भूमिका निभाई। सन् 2001 में भारत सरकार ने महिला सशक्तीकरण वर्ष घोषित किया और महिलाओं के सशक्तीकरण की राष्ट्रीयनीति सन् 2001 पारित किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत राष्ट्र के समस्त 14 वर्ष तक बच्चों को "मुफ्त एवं आवश्यक शिक्षा नीति" लागू की गयी। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के एक दिन बाद 9 मार्च सन् 2010 को राज्यसभा ने महिला आरक्षण बिल पारित किया लेकिन आज भी आजाद मुल्क की महिलाएँ अपने आपको सामाजिक और पारिवारिक दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुई महसूस करती है।

प्रश्न यह उठता है कि राष्ट्र की महिलाएँ शिक्षा, राजनीति, मीडिया, कला और संस्कृति आदि क्षेत्र में अपनी सेवाएँ दे रही हैं लेकिन अब भी लगभग पचास प्रतिशत महिलाएँ शिक्षा से वंचित हैं। अनेक समाज में आज भी कन्या का जन्म लेना अभिशाप समझा जाता है। आजादी के बाद सन् 1951 में ग्रामीण महिला साक्षरता दर लगभग 4.9 प्रतिशत थी और शहरी क्षेत्रों में लगभग 22 प्रतिशत थी जो सन् 1991 में लगभग 40 प्रतिशत हो गयी जो एशिया देशों में काफी कम साक्षरता दर मानी जाती है। सन् 2001 में यह दर लगभग 55 प्रतिशत हो गयी। वर्तमान में उत्तरोत्तर प्रगति हुई लेकिन औसत दर अब भी कम है। निश्चित तौर महिलाओं की साक्षरता दर की कमी का राष्ट्र के आर्थिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। आकड़ों से यह भी स्पष्ट है कि अशिक्षित महिलाओं में ही सर्वाधिक कुपोषण की समस्या होती है और प्रसव के दौरान मृत्युदर भी इनमें सर्वाधिक है। इन महिलाओं को कोई स्वायत्तता एवं स्वतंत्रता नहीं होती है और पुरूष का गुलाम बन कर घर गृहस्थी के दायित्व का निर्वहन करती हैं। माता की शिक्षा के स्तर का सर्वाधिक प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। केरल एवं मिजोरम जैसे राज्यों में महिला साक्षरता दर लगभग 90 प्रतिशत से अधिक है वहीं सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्य मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार एवं राजस्थान में महिला साक्षरता दर अन्य राज्यों से काफी कम है। राजस्थान में ग्रामीण महिलाएं लगभग 20 प्रतिशत से भी कम शिक्षित हैं। यदि उच्च शिक्षा की ओर ध्यान दिया जाय तो अब भी लगभग दो प्रतिशत महिलाएं ही उच्च शिक्षा हासिल कर पाती हैं। इसके पीछे मूल कारण है देश की गरीबी। विश्व बैंक के सन् 1997 की रिपोर्ट के अनुसार देश की एक तिहाई जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है। सरकार की ओर से निःशुल्क पुस्तक, गणवेश, यातायात की सुविधा एवं उपस्थिति से 'मुक्ति' के बावजूद गरीब परिवार की कन्याएं पारिवारिक दायित्व के कारण उच्च शिक्षा हासिल नहीं कर पाती हैं।

दूसरा प्रश्न यह है आज भी ग्रामीण स्कूलों में उपयुक्त शौचालय, पेयजल एवं मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 54 प्रतिशत विद्यालयों में पेयजल एवं लगभग 80 प्रतिशत विद्यालयों में छात्राओं के लिए पृथक शौचालय नहीं है। बालक – बालिका अनुपात में भी परिवर्तन आया है। सन् 1991 के स्त्री–पुरुष अनुपात 927 के जगह सन् 2001 में 933 को गया लेकिन आज भी कन्या भ्रूण हत्या, दहेज उत्पीड़न, नारी शोषण, बाल–विवाह, घरेलू हिंसा, तस्करी एवं यौन उत्पीड़न जैसे अपराधों के रोकथाम में मीडिया ने अपनी

सकारात्मक भूमिका का निर्वहन किया और एक दिशा प्रदान करने की कोशिश की है लेकिन प्रयास की गति धीमी है, क्योंकि आजादी के 67 वर्षों के बाद भी देश की आधी आबादी का 40 प्रतिशत अपने मूलभूत अधिकार स्वतंत्रता, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के लिए संघर्ष कर रहा है वह सचमुच विचारणीय प्रश्न है। इलेक्ट्रानिक माध्यमों के धारावाहिकों एवं समाचारिक चैनलों के सूचनात्मक और ज्ञानप्रद कार्यक्रमों ने भारतीय समाज में पुरूष प्रधान मानसिकता में बदलाव लाना शुरू कर दिया है। समाचार पत्रों ने भी बालिका शिक्षा, कन्या जन्म पर बेटी बचाओ अभियान जैसे कार्यक्रमों से समाज में महिलाओं को उनका अधिकार और गरिमा प्रदान करने में भूमिका निर्वहन कर रही है। इन समाचारों एवं कार्यक्रमों के बल पर महिला शिक्षा एवं आर्थिक स्वावलंबन एवं उनके व्यक्तित्व को तेजस्विता मिली है। यह अभी भी पूर्ण नहीं है भारतीय स्त्री अपने अधिकारों के लिए ऐसी संघर्षरत है, ऐसी आशा है मीडिया उन्हें यह अधिकार एक दिन अवश्य प्रदान करेगी।

पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा ताई पाटिल की महिलाओं की आकांक्षाओं पर चार पंक्तियाँ निम्नवत प्रस्तुत हैं :

"हटा दो सब बाधाएं मेरे पथ की,
मिटा दो आशंकाएं सब मन की,
जमाने को बदलने की शक्ति को समझो,
कदम से कदम मिला के चलने तो दो मुझको।"

संदर्भ ग्रन्थ :

- आजकल – अंक मार्च 2008।
- कुमार, राधा : स्त्री संघर्ष का इतिहास।
- जोशी, रामशरण : मीडिया विमर्श।
- विकिपीडिया : भारत में महिलाएँ।
- श्रीधर, विजय दत्त : भारतीय पत्रकारिता कोश–खण्ड दो।
- प्रियवंद : भारत विभाजन की अन्तः कथा।
- योजना – अंक अक्टूबर 2008।
- विक्टोरिया, ए.वेलकाफ : वूमेन एजूकेशन इन इंडिया।
- शास्त्री, मंगल देव : भारतीय संस्कृति का विकास।
- दिनकर, राम धारी सिंह : संस्कृति के चार अध्याय।
- श्रीधर, विजय दत्त : भारतीय पत्रकारिता कोश–खण्ड एक।